कत्थक साधना केंद्र के वार्षिकोत्सव में कु. काजल शर्मा विचार रखते हुए। साथ में हैं डा. नारायणराव मंगरूलकर तथा प्रा. हरदास।

नवभारत 4th July 1985

कत्थक साधना केंद्र का वार्षिकोत्सव संपन्न

नागपुर. विद्यार्थियों में रंगमंच प्रदर्शन क्षमता तथा उन्हें प्रेरणा देकर और उनके पालक तथा अन्य रसिकों में नृत्य के प्रति आदर तथा उत्साह उत्पन्न करना, इसी उद्देश्य से माधवनगर स्थित कत्थक साधना केंद्र में तीसरा वार्षिकोत्सव मनाया गया। नागपुर के प्रसिद्ध संगीत समीक्षक डा. नारायणराव मंगरूलकर तथा कत्थक नृत्यांगना कु. काजल शर्मा प्रमुख रूप से उपस्थित थे। केंद्र की संचालिका श्रीमती ललिता हरदास ने स्वागत करके केंद्र के बारे में जानकारी दी। डा. मंगरूलकर ने नटराज को हार पहनाकर तथा काजल शर्मा ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। क्षितिज तथा क्षमा हरदास ने गणेश वंदना से शुरुआत करके विष्णु स्तुति तथा दीप नृत्य प्रस्तुत किया। शिवपंचाअर ओम नमः शिवाय। इन ५ शब्दों में शिवस्तुति कत्थक द्वारा प्रस्तुत किया सुनीता बगाले, गौरी काले, भाग्यलक्ष्मी मोघे तथा सुहासिनी ओफने। इसके पश्चात कत्थक नृत्य का प्रदर्शन विविध स्तर पर विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया सराहनीय था- निलम मिस्त्री (प्रारंभिक कत्थक), सुमित्रा शास्त्री, प्राजक्ता टिकले, प्रफुल्ल खोलकुटे, कोमलाराव, मोनिका बोरीकर, मंजीरी दानी (कत्थक प्रवेशिका प्रथम) तथा रश्मि गंगने, पल्लवी सालकर, स्मिता मल्ले, वैशाली पिंपरकर (प्रवेशिका पूर्ण) केंद्र की वरिष्ठ छात्राओं ने कत्थक की खासियत तीनताल तथा झपताल में योग्य हस्त मुद्राओं द्वारा तथा ठाठ, गतभाव, गतनिकास, त्रीताल की तिहार्द द्वारा अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया।

एकपात्री अभिनय में गौरी काले ने द्रौपदी वस्त्रहरण तथा सुनीता बंगाले ने 'नायिका भेद' आपके अभिनय क्षमता का प्रदर्शन करने में समर्थ रहे। माखनचोरी गतभाव में स्मिता मुले ने यशोदा तथा कृष्ण की नटखट लीलाओं का वर्णन प्रस्तुत किया।

कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े, इस गीत पर प्रस्तुत की गयी नृत्य नाटिका में भगवान श्रीराम को किन भक्तों से काम पड़ा इसका बैले के रूप में प्रस्तुतीकरण किया गया। आलसी सूर्य फूल इस नृत्य नाटिका द्वारा काम का महत्व अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से दर्शाया गया। होली नृत्य के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अंत में साथीदारों के, बबनराव दयाल तथा श्रीमती सुमन चौधरी (गायन), राम गड़करी तथा गोविंद गडिकर (पेटी), शांतिकुमार (तबला) तथा देवानंद गडिकर (मृदंग) केंद्र की तरफ से भेंट डा. मंगरुलकर के हस्ते तथा सभी विद्यार्थियों को प्रशस्तिपत्र कु. काजल शर्मा के हस्ते वितरित किया गया। दोनों अतिथियों ने केंद्र की गतिविधियों की सराहना की और श्रीमती ललिता हरदास को गुरु-शिष्य परंपरा का जतन करने के लिये विशेष अभिनंदन किया। श्रीमती ललिता हरदास ने कार्यक्रम संचालन तथा प्राचार्य श्री अनंत हरदास ने आभार प्रदर्शन किया।